आलस्य और अलबेलापन - 45

अव्यक्त बापदादा :- (26. 03. 1993)

➳ _ ➳ अलबेलापन कमजोरी लाता है, इसलिये अलर्ट रहो। सभी संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें हो ना! संगमयुग की विशेषता क्या है जो किसी भी युग में नहीं है? **संगमयुग की विशेषता है-एक तो प्रत्यक्ष फल मिलता है और एक का पद्म गुणा प्राप्ति का अनुभव इसी जन्म में ही होता है।** प्रत्यक्ष फल मिलता है ना। अगर एक सेकेण्ड भी हिम्मत रखते हो तो मदद कितने समय तक मिलती रहती है।

➳ _ ➳ किसी एक की भी सेवा करते हो तो खुशी कितनी मिलती है तो एक की पद्म गुणा प्राप्ति अर्थात् प्रत्यक्षफल इस संगम पर मिलता है। तो ताजा फूट खाना अच्छा लगता है ना तो आप सभी प्रत्यक्ष फल अर्थात् ताजा फल खाने वाले हो, इसीलिए शक्तिशाली हो। कमजोर तो नहीं हैं ना। सब पॉवरफुल हैं। कमजोरी को आने नहीं देना।

➳ _ ➳ जब तन्दरुस्त होते हैं तब कमजोरी स्वत: खत्म हो जाती है। सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सदा शक्ति मिलती रहती है, तो कमजोर कैसे होंगे। कमजोरी आ सकती है? कभी गलती से आ जाती है? जब कुम्भकरण की नींद मे अलबेले होकर सो जाते हो तब आ सकती है, नहीं तो नहीं आ सकती है।

➳ _ ➳ आप तो अलर्ट हो ना। अलबेले हो क्या? सभी अलर्ट हैं? सदा अलर्ट हैं? संगमयुग में बाप मिला सब-कुछ मिला। तो अलर्ट ही रहेंगे ना। जिसको बहुत प्राप्तियां होती रहती हैं वो कितना अलर्ट रहते हैं। रिवाजी बिजनेसमैन को बिजनेस में प्राप्तियां होती रहती हैं तो अलबेला होगा या अलर्ट होगा? तो आपको एक सेकेण्ड में कितना मिलता है! तो अलबेले कैसे होंगे? **बाप ने सर्व शक्तियां दे दीं। जब सर्व शक्तियां साथ हैं तो अलबेलापन नहीं आ सकता है। सदा होशियार, सदा खबरदार रहो!**

अव्यक्त बापदादा :- (25. 11. 1993)

➳ _ ➳ सदा अपने को चलते-फिरते, खाते-पीते बेहद वर्ल्ड ड्रामा की स्टेज पर विशेष पार्टधारी आत्मा अनुभव करते हो? **जो विशेष पार्टधारी होता है उसको सदा हर समय अपने कर्म अर्थात् पार्ट के ऊपर अटेन्शन रहता है।** क्योंकि सारे ड्रामा का आधार हीरो पार्टधारी होता है। तो इस सारे ड्रामा का आधार आप ही ना।

➳ _ ➳ तो विशेष आत्माओं को वा विशेष पार्टधारियों को सदा इतना ही अटेन्शन रहता है? विशेष पार्टधारी कभी भी अलबेले नहीं होते। अलर्ट होते हैं। तो कभी अलबेलापन तो नहीं आ जाता? कर तो रहे हैं, पहुँच ही जायेंगे, ऐसे तो नहीं सोचते? कर रहे हैं लेकिन किस गति से कर रहे हैं? चल रहे हैं लेकिन किस गति से चल रहे हैं? गति में तो अन्तर होता है ना।

➢➢ **संगमयुग की विशेषता - जो किसी और युग में नही हैं**

➳ _ ➳ प्रयत्क्ष फल मिलता है।

→ अभी अभी किया अभी अभी खुशी

→ अभी अभी किया अभी अभी अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति

➳ _ ➳ **एक का पदम गुणा प्राप्ति**

➳ _ ➳ **बाप मिला सब कुछ मिला**

➳ _ ➳ जन्मते ही वरदान मिला

→ **पवित्र बनो योगी बनो**

➳ _ ➳ एक सेकेंड मे सारे कल्प की तकदीर

➳ _ ➳ **एक सेकेंड के निश्चय से पदम गुना हिम्मत**

➳ _ ➳ लौकिक सम्बंधो मे नजरिया बदलने से उनके प्रति निस्वार्थ प्यार

➳ _ ➳ विशाल दैवीय परिवार मिला

➳ _ ➳ **सर्व सम्बंधो का रस एक बाप से**

➳ _ ➳ **परमात्म मिलन का अनुभव**

➳ _ ➳ दैवीय दृष्टि, वरदान

➢➢ **सर्वशक्तिवान अर्थात ताजा फल खाने वाले या प्रयत्क्ष फल खाने वाले शक्तिशाली**

➳ _ ➳ सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सदा शक्ति मिलती रहती है

➳ _ ➳ शक्ति लेने का साधन

→ **सोल कोनशियसनेस स्थिति**

→ जिससे स्नेह होता है उसकी याद अपने आप आती है व वो सब कुछ न्योछावर कर देता है।

→ **जो कहता है उसी प्रमाण करना**

→ आज्ञाकारी फरमानबारदार रहना

→ **निरंतर याद मे रहना**

→ **मन वचन कर्म मे अपवित्रता न हो**

➢➢ **जब अलबेले होकर सोते है तो कमजोरी आ जाती है।**

➳ _ ➳ अलबेले कब होते है ?

→ कुम्भकरण की नींद मे सोते

→ विस्मृति की नींद

- **बाबा से हुई प्राप्तियों को भूलने पर**

➳ _ ➳ आलस्य

→ नींद से सम्बंधित

➳ _ ➳ अलबेलापन

→ मन से सम्बंधित

- आज नहीं कल करेंगे
- जितना भाग्य मे होगा मिल जायेगा

➳ _ ➳ **सभी अलर्ट और सदा अलर्ट रहो।**

➢➢ फरिश्ता बनने में बाधक

➳ _ ➳ मैंपन - मोटे रुप से मैंपन तो खत्म कर दिया है।

→ देह के प्रति आकर्षण नही है

→ देह के प्रति लगाव भी नही है

→ सुविधाओं के प्रति आसक्ति भी नही है।

➳ _ ➳ **पर एक सूक्ष्म मैं अंहकार है।**

→ **अपनी विशेषताओं व गुणों का**

→ मैं समझदार हूं

→ **मेरी हैंडलिंग पावर बहुत अच्छी है।**

→ मेरी साधना योग बहुत अच्छा है।

→ मैं तो औरों से बहुत अच्छा हूं।

→ **मेरा मनन चिंतन बहुत अच्छा है।**

→ **मैं तो बहुत अच्छी पावरफुल कामेंट्री कराता हूं।**

→ मैं बहुत अच्छी सेवा करता हूं।

- **यही सूक्ष्म अंहकार फरिश्ता नही बनने देता।**

➳ _ ➳ **जितना निरंहकारी स्थिति उतना ही आकारी और निराकारी का अनुभव**

➢➢ **स्वमान - मैं विशेष पार्टधारी आत्मा हूं।**

➳ _ ➳ मैं वर्ल्ड ड्रामा की स्टेज पर हूं।

➳ _ ➳ हमेशा ये समझो कि विश्व की सारी आत्मायें मस्तक के आसपास घूम रही हैं।

→ हमें देख रही हैं।

→ हमारे संकल्पों को देख रही हैं।

→ संकल्पों को रीड कर रही हैं।

➳ _ ➳ जो विशेष पार्टधारी होते है

→ **वो सदा अलर्ट रहते हैं।**

→ उनके पुराने संस्कारों की मृत्यु हो चुकी है।

→ अलबेले नही होते है।

→ **हर कर्म पर अटेंशन होता है।**